रंग बदलता आसमान

बालाघाट जिले में बैहर आदिवासी बहुल विकासखंड है, विकासखंड मुख्यालय से 18 कि.मी की दूरी पर मेंडकी ग्राम स्थित है। पेक्स परियोजना के अतंर्गत कम्युनिटी डेव्हलपमेंट सेंटर ने वर्ष 2004 से इस क्षेत्र में कार्य करना प्रारंभ किया। ग्राम मेंडकी जिसकी जनसंख्या 1300 है। जिसमें 171 परिवार गरीबी रेखा के नीचे निवास करते हैं। मुख्यतः गोंड आदिवासी और मरार जाति के लोग यहॉ निवास करते हैं जो अपनी थोडी सी कृषि भूमि में कृषि कार्य, कृषि मजदूरी से जीवन यापन करते हैं कुछ समय के लिए परिवार के किसी ना किसी सदस्य को पलायन भी करना पडता है। ऐसा क्षेत्र जहॉ कभी सामूहिक रूप से कार्य करने की सोच ही नहीं रही हो। महिलाओं में किसी ने कोई संभावना ही नहीं देखी हो और स्वयं महिलाओं ने भी नहीं सोचा हो कि वे परिवार के किसी निर्णय में भागीदार हो सकती हैं, इस गॉव में संस्था ने महिलाओं के 07 स्वयं सहायता समूहों का गठन किया। जब समूहों का गठन किया गया उस समय परिवार के सदस्य महिलाओं की हंसी उडाते और हतोत्साहित करते कि, क्या होगा कुछ दिन समूह चलेगा और टूट जायेगा क्यों अपना पैसा और समय बर्बाद कर रहे हो घर और खेती का काम करो।

मेंडकी मुख्य गॉव का एक टोला जिसे नयाटोला कहा जाता है इस टोले में बसने वाले सभी 20 परिवार गरीबी रेखा के नीचे आते हैं, जिसमें 17 पिछडे वर्ग और 03 परिवार दलित वर्ग से हैं। इन सभी परिवारों की महिलाओं ने कभी सोचा ही नहीं था कि वे कभी एक साथ बैठकर अपने और परिवार के बारे में कुछ सोच पायेंगी या कुछ कर पायेंगी। इन महिलाओं को संगठित करने के उद्देश्य में 10 रू. की मासिक बचत ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। 03 दिसंबर 2004 को महिलाओं के समूह ने विधिवत समूह का स्वरूप लिया और समूह का गठन कर समूह के नियम आदि बनाये गये। धीरे धीरे प्रतिमाह की बैठक और बचत महिलाओं के जीवन का हिस्सा बनने लगी। महिलाओं ने इस बीच बैंक, अस्पताल और पंचायत के दफतर भी देखे और इनकी कार्यप्रणालियों को समझने का प्रयास भी किया।

मार्च 2005 में जब संस्था से 2000 रूपये की चक्रीय राशि समूह को प्राप्त हुई तो तीन माह तक तो समूह ने इन पैसों का कुछ नहीं किया राशि बैंक में ही जमा रही। वजह थी जब तक समूह के सभी सदस्य किसी काम के लिए एक मत नहीं हो जाते पैसों का उपयोग नहीं किया जावेगा। अंततः महिलाओं ने तय किया कि सुअर पालन किया जावे,

सुअर खरीदने के लिए घर के पुरूषों से मदद ली गयी और 2000 रू. के तीन सुअर खरीदे गये। समूह को झटका लगा जब पहले ही दिन एक सुअर मर गया, समूह में आपसी द्वंद शुरू हो गया कि यदि ये सुअर मर गये तो हम आर.एफ. की राशि कहॉ से वापस करेंगे। लेकिन समूह की अध्यक्ष ने हिम्मत बंधाते हुए कहा कि ऐसे हार मानने से कुछ नहीं होगा हम आगे कुछ कर नहीं पायेंगे। अतः समूह ने एक साल तक सुअर पालन किया, उस समय तक इनकी संख्या 13 हो गयी थी, लेकिन एक नयी समस्या आडे आ रही थी, सुअर खेतों में जाकर फसल खराब कर रहे थे। जिससे उनसे लडाई होने लगी जिनकी फसलें बर्बाद हो रहीं थी। जुलाई 2006 में समूह ने निर्णय लिया कि सुअर को बेच देते हैं और बकरी खरीद लेते हैं बकरियों का रखरखाव आसान है अतः सुअर बेचकर 05 बकरियॉ खरीदी गयीं। लगभग एक वर्ष में समूह के पास 13 बकरियॉ हो गयी। इन 13 बकरियों में से दो बकरियों के बच्चों को जून 2007 में 2800 रू. में बेचकर आर.एफ. की राशि रू. 2000 अपने फेडरेशन में जमा कर दिया। समूह की निरंतर बढ़ती हुई क्षमता को देखते हुए समूह को एस.जी.एस.वाय. से जोडा गया जिसके फलस्वरूप प्रथम ग्रेडिंग के बाद समूह की लिमिट बनी, जुलाई 2007 में पहली किश्त 5000रू. समूह को प्राप्त हुए। इस राशि के उपयोग पर महिलाओं ने सोचा कि क्या रोजगार हम करें जो गॉव के लोगों की मांग पर आधारित हो अतः महिलाओं ने सोचा कि क्यों ना स्पीकर सिस्टम खरीदा जाये क्योंकि किसी भी सामाजिक और धार्मिक समारोह में लोग बाहर से किराये पर लाते हैं।

समूह की पिछले तीन वर्ष की बचत से 5000 रू. मिलाकर साउंड सिस्टम खरीदा गया, पर समूह की एक और आवश्यकता थी बैंड बाजे की जिसे खरीदने के लिए उनके पास पैसे नहीं थे। महिलाओं ने अपने समूह की बैठक में निर्णय लिया कि अपने अपने परिवार में इसकी चर्चा करते हैं और उनसे सहयोग लेते हैं। परिवार में चर्चा करने पर परिवार के सदस्यों ने उन्हें कहा कि अपने समूह में बैठकर निर्णय लो जो तुम्हारा समूह कहेगा वह सभी करेंगे। इस पर समूह ने बैठक कर तय किया कि सभी महिलाएं अपने परिवार से 500 रू. लेंगी और इस तरह 7000रू. जमा हो गये

महिलाओं ने अपने घर के युवा बच्चों को बैंड बाजा ाश में बाहर ना जाना पडे। 1 अगस्त 2007 को समूह लोगों को बुलाकर अपनी सामग्री दिखायी। समूह को तुरंत ही काम मिला रामायण मंडली में अपना सेट लगा कर 600 रूपये की पहली कमाई की।

आज समूह की सभी महिलाएं कॉफी खुश हैं क्योंकि उन्होंने अपने परिवार की आय के स्रोत को सुनिश्चित करने में सहयोग किया, उनके पास बचत राशि भी है, बकरियों के रूप में लगभग 13 हजार रूपये हैं, स्पीकर और बैंड बाजे के रूप में संसाधन भी हैं। सबसे बडी और महत्वपूर्ण बात है **परिवार का कोई भी निर्णय इन महिलाओं से पूछे बगैर नहीं होता। परिवार के वे सदस्य जो कभी महिलाओं को समूह में बैठने पर ताने देते थे आज बैठक के समय की याद दिलाते हैं।**

CDC, Balaghat
cdcindia@rediffmail.com